इकाई 2 .ध्वनि परिवर्तन के कारण तथा दिशाएँ

2.1 प्रस्तावना

2.2 उद्देश्य

2.3 ध्वनि परिवर्तन के कारण तथा दिशाएँ - अर्थ एवं स्वरूप

2.4 ध्वनि परिवर्तन के कारण तथा दिशाएँ

- 2.4.1 ध्वनि परिवर्तन के कारण
- 2.4.2 ध्वनि परिवर्तन के आभ्यन्तर कारण
- 2.4.3 ध्वनि परिवर्तन के बाह्य कारण
- 2.4.4 ध्वनि परिवर्तन की दिशाएँ
- 2.4.5 लोप अभिनिधान
- 2.4.6 आगम प्रागुपजन
- 2.4.7 स्वर भक्ति या विक्रकर्ष

2.4.8 समीकरण

2.4.9 विषमीकरण

2.4.10 विपर्यय

2.4.11 अभिश्रुति, अपश्रुति

2.4.12 सादृश्य

2.4.13 अनुनासिकता, ऊष्मीकरण, सन्धि, घोषीकरण अघोषीकरण, महाप्राणीकरण, अल्पप्राणीकरण, मात्राभेद।

2.5 सारांश

2.6 शब्दावली

2.7 अभ्यास प्रश्नों के उतर

2.8 सन्दर्भ / ग्रन्थ सूची

2.9 सहायक/ उपयोगी पाठ्य सामग्री

210 निबन्धात्मक प्रश्न

2.1 प्रस्तावना

संस्कृत भाषाविज्ञान में ध्वनियों का विशेष महत्वपूर्ण स्थान है। अतएव भाषाविज्ञान में ध्वनियों का विशेष रूप से अध्ययन किया जाता है। पूर्व इकाई में संस्कृत ध्वनियों के विकास क्रम पर प्रकाश डाला जा चुका है।

प्रस्तुत इकाई में ध्वनि परिवर्तन के कारण और दिशाओं पर प्रकाश डाला जायेगा। ध्वनि परिपवर्तन एक सहज प्रक्रिया है, क्योंकि उच्चारण करने पर किसी न किसी प्रकार से ध्वनि परिवर्तित हो जाती है। इस ध्वनि परिवर्तन के अनेक कारण हैं।

इस इकाई में ध्वनि परिवर्तन के कारणों और दिशाओं को प्रस्तुत किया जायेगा। ध्वनि परिवर्तत के मुख्य रूप से आभ्यन्तर और बाह्य कारण हैं। यहाँ इन कारणों को प्रस्तुत किया गया है, जिससे आप ध्वनि परिवर्तन के कारण और दिशाएँ समझ सकेंगे और इस विषय में दक्षता प्राप्त कर सकेंगे।

2.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के अनन्तर आप-

- ध्वनि परिवर्तन के कारणों और दिशाओं को समझ पायेंगे।
- ध्वनि परिवर्तन एक सहज प्रक्रिया हैं, अतएव ध्वनि परिवर्तन होता रहता है।
- ध्वनि परिवर्तन के क्या कारण है? इसको आप जान सकेंगे।
- ध्वनि परिवर्तन की दिशाओं का ज्ञान कर सकेंगे।
- ध्वनि परिवर्तत के आभ्यन्तर और बाह्य कारणों की जानकारी पा सकेंगे।
- यह समझ सकेंगे की किस प्रकार द्वादश के सादृश्य पर एकदश भी एकादश बन जाता है?
- यह भी जानकारी कर सकेंगे कि किस प्रकार प्रयत्न- लाघव, अशिक्षा और अज्ञान, अनुकरण की अपूर्णता, भावुकता आदि के कारण ध्वनियों में परिवर्तन हो जाता है।
- यह भी जानकारी कर सकेंगे कि किस प्रकार विपर्यय आदि के द्वारा ध्वनि परिवर्तन हो जाता है।
- अपश्रुति आदि के द्वारा कृष्ण , चत्वारः को चतुरः आदि हो जाते हैं

2.3 ध्वनि परिवर्तन के कारण तथा दिशाएँ- अर्थ एवं स्वरूप

परिवर्तन प्रकृति की स्वाभाविक प्रक्रिया है। संसार की प्रत्येक वस्तु परिवर्तनशील है। परिवर्तन की इस गति का प्रभाव भाषाओं पर भी पड़ता है। संसर की भाषाओं में निरन्तर परिवर्तन हो रहा है। भाषा में यह परिवर्तन कई प्रकार से होता है। यह परिवर्तन ध्वनि में, रूप में और अर्थ में सहज रूप से

दृष्टिगोचर होता है। भाषा में कभी-कभी कुछ ध्वनियों का प्रयोग कम हो जाता है। कुछ ध्वनियाँ धीरे-धीरे लुप्त हो जाती है और कनिपय नवीन ध्वनियों का समावेश हो जाता है। इन ध्वनिपरिवर्तनों के अनेक कारण हैं। उदाहरण के लिए स्वर्ग शब्द के अनुकरण पर हिन्द में नरक के स्थान पर नर्क का प्रयोग किया जाने लगा है।

इसी प्रकार अनेक कारणों से ध्वनि परिवर्तन हो जाता है। महाभाष्यकार महर्षि पतंजलि लिखते हैं कि इस परिवर्तन के योग से ही हिंस परिवर्तित होकर व्यत्यय से सिंह बन जाता है।

2.4 ध्वनि परिवर्तन के कारण तथा दिशाएँ

2.4.1 ध्वनि परिवर्तन के कारण-

संसार की प्रत्येक वस्तु परिवर्तनशील है। परिवर्तन का चक्र जीवन के हर क्षेत्र में सतत चलता रहता है। मनुष्य की जातियाँ तथा उनके स्थान, वेशभूषा, रहन-सहन बदल जाते हैं। परिवर्तन की गति का प्रभाव संसर की सभी भाषाओं पर भी पड़ता है। भाषाओं का जो रूप आज से हजारों वर्ष पूर्व था वह अब नहीं है। संसार की प्राचीन भाषाएँ संस्कृत, ग्रीक, लैटिन के रूप में परिवर्तन होने से बाद में अनेक भाषाओं का जन्म हुआ, जिनमें अधिकांश वर्तमान समय में विभिन्न क्षेत्रों में बोली जाती है। भाषाओं में इस प्रकार होने वाले परिवर्तन को भाषाविज्ञानी 'विकारी' अथावा 'विकास ' कहते हैं। भाषा में यह परिवर्तन कई प्रकार से होता है- ध्वनि में, रूप में या अर्थ में। कभी-कभी सिखाने-सीखने की प्रक्रिया में कुछ ध्वनियों का प्रयोग कम हो जाता है। धीरे-धीरे लुप्त भी हो जाता है। कुछ नवीन ध्वनियों का समावेश हो जाता है। उच्चारण सम्बन्धी अन्तर होने से भी परिवर्तन हो जाते हैं। कभी-कभी सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, भौगोलिक कारणों से भाषा में ध्वनि-सम्बन्धी परिवर्तन होते रहते हैं। ध्वनि परिवर्तनों को साधारणतया कारणों से भाषा में ध्वनि -सम्बन्धी परिवर्तन होते रहते हैं। ध्वनि परिवर्तनों को साधारणतया दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। जब ध्वनि -उच्चारण करने वालों के प्रभाव से ध्वनियों में अन्तर उत्पन्न हो जाता है, तो उन्हें आभ्यन्तर कारण कहा जाता है। परन्तु जब भाषा की ध्वनियाँ अन्य कारणों से प्रभावित होती है जैसे- राजनैतिक, धार्मिक, भौगोलिक आदि तो इस तरह के परिवर्तन बाह्य कारण कहलाते हैं। इस प्रकार ध्वनि परिवर्तन के कारण दो प्रकार के होते हैं ।

1. आभ्यन्तर कारण
2. बाह्य कारण

2.4.2 ध्वनि परिवर्तन के आभ्यन्तर कारण

ध्वनि परिवर्तन लाने वाले प्रमुख आभ्यन्तरण कारण इस प्रकार है-

1. **मुख -सुख** (प्रयत्न-लाघव)-मनुष्य ध्वनियों का उच्चारण अपनी सुविधा से करता है। बोलते समय उसकी इच्छा रहती है कि कम अथवा शीघ्र उच्चारण करके अपना अभिप्राय श्रोता पर प्रकट कर दे। इस प्रकार अधिक श्रम से बचने का प्रयास रहता है। जब किसी उच्चारण में कठिनाई होती है अथवा ठीक से उच्चारण नहीं किया जा सकता है तो व्यक्ति अपनी सुविधा के लिए उस उच्चारण को छोड़ अपने ढंग से उच्चारण करने लगता है, इसे मुख-सुख कहते हैं।

अन्धकार को अँधेरा, स्कूल की इस्कूल, स्टेशन को इस्टेशन (सटेशन), बाह्मण को ब्राम्हण (या वामन), कृष्ण को क्रिस्न आदि उच्चारण करते हैं। अंग्रजी के शब्दों की कुछ ध्वनियों का उच्चारण नहीं किया जाता है, क्योंकि उनके उच्चारण में कठिनाई होती है, । दो भिन्न-भिन्न ध्वनियों को एक सा बना दिया जाता है जैसे - धर्म का धम्म अथवा ध्वनि में पूर्ण परिवर्तन कर दिया जाता है जैसे काक से काग शब्द बनते हैं। यह प्रयत्न - लाघव के कारण होता है अर्थात् थोड़े में तथा सरलतापूर्ण उच्चारण करने की प्रवृत्तियॉं काम करती है। ध्वनियों का विकास सरलता की ओर रहता है अनेक प्राचीन ध्वनियों के उच्चारण में अब परिवर्तन हो गया है। वैदिक क्रिया रूप, वचन, लिंग, कारक रूपों की भिन्नता में सरलीकरण के कारण ही बहुत कमी आ गयी है। दीर्घ स्वरों को कभी-कभी ह्रस्व स्वरों में बदल दिया गया है। आकाश से अकास, नारायण से नरायन, वार्ता से बात, दूर्वा से दूब आदि इसी प्रकार के शब्द है। इसी तरह से बज्राङ्ग से बजरांग एवं बजरंग रूप बन गया है, जो अब बहुत प्रचलित हो गया है।

इसी प्रकार प्रयत्न-लाघव के प्रभाव से अनके विदेशी शब्दों में भी परिवर्तन हुए हैं। अरबी शब्द-अमीर-उल्-बहर (समुद्र का शासक) आगे चलकर अंग्रजी के 'एडमिरल (जलसेनापति) के रूप में परिवर्तित रूप प्रयोग करते हैं। जैसे रूपनारायण को रूपा, विष्णु को विशुन आदि नामों से सम्बोधित किया जाता है। इसी प्रकार अनके शब्द हैं जो संक्षिप्त रूप में प्रयोग किए जाते हैं। जैसे- माइक्रोफोन को माइक, टेलीविजन को टी0वी0, एरोप्लेन को प्लेन आदि। कभी-कभी लिखित रूप तथा उच्चरित रूप में अन्तर पड़ जाता है। अंग्रजी भाषा में इस प्रकार के अनेक उदाहरण प्राप्त होते हैं। ज्ञपहीज का उच्चारण 'नाइट होता है जिसमें 'क' तथा 'घ' ध्वनियाँ नहीं बोली जाती है। इसी प्रकार (डॉटर), थ्रू जैसे शब्दों का लिखित रूप कहे जाने वाले रूप से भिन्न होता है। संस्कृत की भी कई ध्वनियों के उच्चारण में आगे चलकर अन्तर आ गया। जैसे 'ष' तथा 'ऋ' ध्वनियों का उच्चारण ठीक प्रकार नहीं किया जाता है। कभी-कभी कुछ नई ध्वनियों का भाषा में आगम हो जाता है एंग्लो - सेक्सन (anglo saxon)में 'च' ध्वनि बाद में आई है इससे चर्च (church)चीज (cheese) जैसे शब्द बने हैं। इसी तरह संस्कृत में ट वर्ग की ध्वनियाँ द्रविड़ भाषाओं के प्रभाव से आई हैं, अतः यह स्पष्ट हो जाता है कि 'ध्वनि-परिवर्तन' या 'ध्वनि' 'विकार' में पयत्न -लाघव अथवा मुख-सुख का अत्यधिक प्रभाव पड़ता है।

2.बोलने में शीघ्रता-शीघ्रता से बोलने के कारण भी ध्वनियों में परिवर्तन हो जाता है। प्रायः बातचीत में देखा जाता है कि शब्दों का उच्चारण शीघ्रता से होने के कारण ध्वनियों का रूप ठीक नहीं रहता है। जैसे - पंडितजी को पंडी जी, मास्टर साहब को मास्साब, मार डाला को माड्डाला आदि रूपों में उच्चारण किया जाता हे। अंग्रेजी में इसी प्रकार के शब्द रूप पाए जाते हैं, जो बोलने के कारण संक्षिप्त हो जाते हैं, जैसे 'वुड नॉट'(would not)को 'वोन्ट'(wont) तथा डू नॉट (do not) को डोन्ट (dont) आदि। अब ही को अभी, तब ही को तभी आदि रूपों में उच्चारित करते हैं।

3.**अशिक्षा तथा अज्ञान**- अशिक्षा एवं अज्ञान के कारण भी ध्वनियों में परिवर्तन होता रहता है। शिक्षित व्यक्ति भाषा को सही ढंग से पढ़-लिख सकता है तथा शब्दों को शुद्ध रूप में ग्रहण कर सकता है, किन्तु अशिक्षित व्यक्ति ध्वनि के वास्तविक स्वरूप से अपरिचित रहता है तथा कथित रूप को सुनकर उसी को अपने अनुसार प्रयोग करने लगता है। इस प्रकार ध्वनियों के अनुचित प्रयोग से ध्वनियों में परिवर्तन आने लगता है । अज्ञान के कारण अनेक विदेशी शब्दों का उच्चारण ठीक से न समझने के कारण ध्वनि परिवर्तन हो जाता है। जैसे - रिपोर्ट को रपट, कम्पाउन्डर को काम्पोडर, ओवरसियर का ओसियर, स्टेशन को टेशन, यूनिवर्सिटी का अनवर्सिटी हो जाते हैं। अज्ञान तथा अशिक्षा के कारण ध्वनियों में ध्वनि विपर्यय, मात्रा भेद, घोषीकरण, अघोषीकरण, महाप्राणीकरण, अल्पप्राणीकरण जैसे परिवर्तन होते रहते हैं। अज्ञान के कारण जिन व्यक्तियों को ध्वनियों के उचित रूप का पता नहीं रहता है, वे त्रटिपूर्ण ध्वनि-उच्चारण करते रहते हैं। सादृश्य के कारण भी ध्वनि परिवर्तन हो जाते हैं। स्वर्ग के सादृश्य पर नरक का नर्क बना लिया गया है। 'एकादश' द्वादश के सादृश्य पर 'एकादश' बना लिया गया है । इस प्रकार अज्ञान तथा अशिक्षा के कारण ध्वनियों के सही रूप से अपरिचित लोग ध्वनि परिवर्तन करते रहते हैं

4. **अनुकरण की अपूर्णता**- जब कोई व्यक्ति किसी ध्वनि का उच्चारण करता है तो दूसरा व्यक्ति उसका अनुकरण करके सीख लेता है। परन्तु अनुकरण में त्रटियाँ हो जाती हैं। सही अनुकारण नहीं हो पाता या उच्चारण में कुछ न कुछ कमी हो जाती है। इस प्रकार अनुकरण अपूर्ण रह जाता है। अतः ध्वनियों में परिवर्तन आता -जाता है, जिसका शनैः-शनै: समाज में प्रचलन हो जाता है। वन्द्योपाध्याय से बनर्जी, उपाध्याय से 'झा', ओम् नमः सिद्धम्' का 'ओनामासीधम' बनना अनुकरण की अपूर्णता के सूचक है । बच्चों की बोली में अनुकरण की अपूर्णता स्पष्ट दिखाई देती है जैसे रोटी को लोटी, रूपया को लुपया सुना जा सकता है, परन्तु बाद में ये दोष दूर हो जाते हैं। ब्राह्मण का

'ब्राम्हण' आदि अनुकरण की अपूर्णता से हो जाते हैं।

5. **भ्रामक व्युत्पत्तियॉं** - जब व्यक्ति किसी अपरिचित शब्द के संसर्ग में आते हैं तथा इस शब्द से साम्य रखता हुआ कोई शब्द भाषा में पहले से ही होता है तो अपरिचित शब्द के स्थान पर अपनी

भाषा के पूर्ण परिचित शब्द का प्रयोग करने लगते हैं। इस प्रकार ध्वनि परिवर्तन की क्रिया चलने लगती है। जैसे अंग्रेजी शब्द 'लाइब्रेरी' का अशिक्षित व्यक्ति भ्रमवश 'रायबरेली' तथा अरबी शब्द 'इतंकाल'को 'अन्तकाल' कह दिया जाता है। इसी प्रकार 'चार्जशीट' को 'चारसीट' 'क्वार्टर' को 'कातल' या 'काटर' 'गार्ड' को 'गारद' कोर्ट को 'कोरट', 'कार्ड' का 'कारड' जैसे शब्द भ्रमवश प्रयोग किए जाने लगते हैं।

6. **भावुकता-** भावुकता वश या प्रेमवश मनुष्य शब्दों का शुद्ध उच्चारण नहीं करते हैं। अतः ध्वनि परिवर्तन होता रहता है। व्यक्तियों के नामों के सम्बन्ध में देखा जाता है कि प्रेम के कारण व्यक्तियों के नाम बिगाड़ कर पुकारा जाता है। जैसे धनीराम का धनुआ, सुखराम का सुक्खा, राजेन्द्र का रज्जो, दुलारी का दुल्ला, बच्चा का बचऊ, बेटी का बिट्टी, बहू का बहुरिया आदि इसी प्रकार के शब्द हैं।

7. **वाग्यन्त्र की विभिन्न**- हर व्यक्ति के वाग्यन्त्र की बनावट पूर्णतः एक जैसी नहीं होती है। अतः प्रत्येक व्यक्ति का ध्वनि उच्चारण भी समान नहीं होता है। वाग्यन्त्र की भिन्नता के कारण ध्वनि उच्चारण में भिन्नता आ जाती है, जैसे कि हर व्यक्ति अब श्, ष, स इन तीन ध्वनियों का सही उच्चारण नहीं कर सकता है। संस्कृत की 'स' ध्वनि 'फारसी' में 'ह' बन जाती है। जैसे 'सिन्धु' का 'हिन्दु', सप्त का 'हफ्त' आदि। 'ऋ' ध्वनि का उच्चारण सम्भव नहीं है।

8. **यदृष्छा शब्द-**बोलते समय व्यक्ति अपने आप शब्द बनाकर बोलते हैं, उन्हें यदृच्छा शब्द कहते हैं। कभी-कभी एक शब्द की समानता पर जोडा़ शब्दों का निर्माण कर लिया जाता है। खान-बाना, रोटी-ओटी, पानी-बानी आदि इसी प्रकार के शब्द हैं। युग्मक रूप बनाते समय ध्वनि परिवर्तन कर लिया जाता है।

9.**आत्मप्रदर्शन**- आत्मप्रदर्शन के कारण भी व्यक्ति बोलते समय ध्वनि-परिवर्तन कर लेते हैं। जैसे - 'खालिस' (शुद्ध) को निखालिस, (अशुद्ध), इच्छा को इक्षा, 'छात्रा' को 'क्षात्र', क्षत्रिय को छत्रिय, 'सेवक' को 'शेवक' आदि प्रकार से परिवर्तित कर लिया जाता है। इसी प्रकार उपर्युक्त को उपरोक्त तथा अन्तराष्ट्रिय को 'अन्तर्राष्ट्रीय' बनाकर प्रयोग किया जाता है। इन शब्दों का प्रचलन अत्यधिक हो चुका है तथा भाषा में ये रूप स्वीकृत हो चुके हैं।

2.4.3 ध्वनिपरिवर्तन के बाह्य कारण

1.**भौगोलिक प्रभाव-** भौगोलिक प्रभाव के कारण ध्वनियों में परिवर्तन हो जाता है। अधिक ठंडे (स्थानों पर व्यक्ति अधिक मुख नहीं खोल सकता है अतः विवृत ध्वनियों का विकास नहीं हो पाता है। गरम देश में इसके विपरीत विवृत ध्वनियों का अधिक विकास होता है। पर्वतों से घिरे क्षेत्र के निवासी बाहरी सम्पर्क में कम आते हैं, अतः उनका मानसिक, सामाजिक, धार्मिक विकास धीमा रहता है, अतः भाषा पर भी इसका प्रभाव पड़ता है तथा परिवर्तन की गति मन्द होती है। पहाडी़ भाग के निवासी यातायात की कमी से थोड़े-थोड़े क्षेत्र से सम्पर्क रखते हैं, अतः भाषा की अनेक बोलियाँ

विकसित हो जाती है, क्योंकि ध्वनि-परिवर्तन थोडी़-थोडी़ दूर के क्षेत्रों में पाया जाता है।

2.**सामाजिक तथा राजनैतिक प्रभाव**- समाज में जब शान्ति, स्थिरता रहती है तो मनुष्यों में विद्या का प्रचार होने से अधिक परिवर्तन नहीं होते हैं, परन्तु बाहरी आक्रमणों से जब समाज में अव्यवस्था व्याप्त हो जाती है, युद्ध का वातावरण रहता है तब भाषा में ध्वनि परिवर्तन अधिक तीव्रता से होते हैं। विदेशी भाषा के प्रभाव से उच्चारण में भिन्नता आ जाती है। मुम्मई अंग्रेजी प्रभाव से बम्बई हो गई, कलिकाता भी कलकत्ता हो गया । राजनैतिक प्रभाव से अनेक नई ध्वनियों का समावेश हो जाता है । राजनैतिक प्रभाव से आर्यभाषाओं में अनके विदेशी ध्वनियाँ आ गई हैं।

3. **लेखन प्रभाव**-लिखने के द्वारा भी ध्वनि परिवर्तन होते रहते हैं। अंग्रेजी के प्रभाव से हिन्दी के मिश्र, शुक्ल, गुप्त, मित्र, अशोक, राम जैसे शब्द क्रमशः मिश्रा, शुक्ला, गुप्ता, मित्रा, अशोका, रामा आदि के रूप में उच्चरित होते हैं। उर्दू के प्रभाव से राजेन्द्र का राजेन्द्रर, प्रधान का परधान, स्कुल का सकूल उच्चारण किया जाता है । इस तरह लेखन रीति ध्वनि परविर्तन में सहायक होती है।

4. **लघु बनाने की प्रवृत्तियॉं** -अधिक लम्बे शब्दों का उच्चारण व्यक्ति को भारस्वरूप लगता है, अतः बोलचाल में संक्षिप्त करने या लघु रूप में प्रयोग करने की प्रवृत्तियॉं काम करती है। व्यक्ति का अभिप्राय श्रोता द्वारा समझ लिया जाता है। यूनियन ऑफ सोवावियत सोशिलिष्ट रिपब्लिक को यू0एस0एस0आर0 या सोवियत रूस कह देते हैं । इसी प्रकार यूनाइटेड स्टेट ऑफ अमेरिका को यू0एस0एस0, पटियाला ईस्ट पंजाब स्टेट्स यूनियन' को 'पेप्सू' कहते हैं। इसी प्रकार संयुक्त राष्ट्र संघ की अनेक संस्थाओं के नामक का संक्षिप्त रूप प्रयोग किया जाता है जैसे - यूनेस्को। इसी प्रकार शुक्ल दिवस को संक्षिप्त करके 'सुदि' कहते हैं। इस प्रकार लम्बे-लम्बे शब्दों में ध्वनि परिवर्तन करके उनका छोटा रूप प्रयोग किया जाता है।

5. **काल का प्रभाव**- ध्वनि परिवर्तन में काल अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। अधिक समय बीतने पर अनेक कारणों से जैसे बदलती राजनीतिक दशा, धार्मिक दशा, सामाजिक दशा के कारण अथवा भाषा के स्वाभाविक विकास के कारण ध्वनियों में परिवर्तन आता जाता हे। लम्बे समय में इसे स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। हजारों वर्ष पूर्व की वैदिक संस्कृत स्वाभाविक गति से काल-प्रभाव से परिवर्तित होकर आज भारती आर्य भाषाओं की जननी बन चुकी है, इसी प्रकार लैटिन, ग्रीक आदि प्राचीन भाषाओं से ध्वनि परिवर्तन होकर आधुनिक यूरोपीय भाषाओं का विकास हुआ है।

6. **सादृश्य** -सादृश्य के कारण भी ध्वनि परिवर्तन होते हैं। किसी एक ध्वनि के सादृश्य पर दूसरीध्वनि का प्रयोग किया जाने लगता है। द्वादश के सादृश्य पर 'एकदश' की 'एकादश' बन गया है। स्वर्ग की समानता पर नरक का 'नर्क' प्रयोग किया जाने लगा है। इसी प्रकार देहाती की समानता पर 'शहराती' शब्द बना लिया गया है।

7. **कलात्मक स्वच्छन्दता**- कवियों द्वारा मात्रा अथवा तुक मिलाने के लिए या श्रुति माधुर्य के

लिए ध्वनियों में परिवर्तन कर दिया जाता है। संसार के स्थान पर जहाना- (जैसे - जे जड़ चेतना जीवन जहाना), बैठाया के स्थान पर बैठाई (जैसे - आसिस देइ निकट बैठाई), नदिया (नदी), हथ्यार (हथियार), बिकरार (विकराल), चंका (चक्का), बादर (बादल), कारे (काले), काजर (काजल) आदि प्रयोग भी मिलते हैं। अनेक स्थानों पर 'ण' अपेक्षा 'न' का प्रयोग किया गया है। जैसे - कन (कण), वीणा (वीना), किरन (किरण) आदि। इस प्रकार तुक मिलाने, लय या मधुरता लाले के लिए ध्वनियों में परिवर्तन होते रहते हैं।

8. **लिपि की अपूर्णता**-

किसी एक लिपि से विश्व की सब ध्वनियों को प्रकट नहीं किया जा सकता है। क्योंकि देखा जाता है कि 'विश्व में कोई भी दो भाषाएँ पूर्ण रूप से एक ही प्रकार की ध्वनियों का प्रयोग नहीं करती है। अतः किसी एक भाषा के लिए पर्याप्त सिद्ध होने वाली लिपि किसी अन्य भाषा के लिए अपर्याप्त सिद्ध होती है। एक भाषा के शब्द दूसरी लिपि में अशुद्ध प्रयोग किए जाने लगते हैं। तमिल भाषा में देवनागरी के वर्गों के पहले तथा पाँचवें वर्ण सूचक चिह्न मिलते हैं। प्रथम वर्ण शेष 3 वर्णों का भी बोध कराता है। अंग्रेजी शब्दों में रोमन लिपि की कमी (अपूर्णता) स्पष्ट प्रतीत होती है। 'व्' (ओ) ध्वनि कही 'अ', कहीं 'आ' तो कहीं 'ओ' को बताती है, जैसे मदर (mother) में 'अ', ऑवर (our) में 'आ', मोर (more) में 'ओ' की तरह आई है। इसी प्रकार (।) ए ध्वनि भी बदलती रहती है। म् (ई) ध्वनि भी कहीं 'इ' कहीं 'ए' तो कहीं 'अ' की तरह आती है। जैसे mere (मियर) में 'इ', henमें 'ए', mother(मदर) में 'अ' की भाँति आई है। इसी प्रकार अन्य उदारण देखे जा सकते हैं। देवनागरी की अनेक ध्वनियाँ जैसे ण, ड़, ङ्, श, ष, रोमन में नहीं हैं। हिन्दी में भी टंकण में चन्द्र बिन्दु (ँ) के स्थान पर (ं) अनुस्वार का प्रचलन हो गया है। उर्दू लिपि तथा गुरूमुखी में स्कूल को सकूल, प्रधान को परधान, प्रेम को परेम, रजेन्द्र को राजेन्द्र जैसे रूपों में लिखा तथा पढा़ जाता है। इस प्रकार लिपि को अपूर्णता का ध्वनि परिवर्तन में प्रभाव पड़ता है।

9. **बलाघात सुर या मात्रा**

बलाघात से ध्वनि परिवर्तन हो जाते हैं। बलाघात युक्त ध्वनि सबल होकर समीपवर्ती ध्वनियों को निर्बल कर देती है। बाद में निर्बल ध्वनियाँ लुप्त हो जाती है। जैसे 'अभ्यन्तर' से 'भीतर', उपाध्याय से ओझा हो गया। सुर के प्रभाव से ध्वनि परिवर्तन हो जाता है, जैसे कुष्ठ का कोढ़, बिल्व का बेल। दो दीर्घ स्वर आने पर एक स्वर हस्व हो जाता है। जैसे नारायण का नरायण, आकाश का अकास

आदि। इस प्रकार बलाघात, सुर आदि के कारण ध्वनि परिवर्तन हो जाते हैं।

10. **विदेशी ध्वनियों का प्रभाव**- विदेशी ध्वनियों के प्रभाव से भी ध्वनियों में परिवर्तन हो जाता है। यही कारण है कि भारतीय भाषाओं में भी अरबी, फारसी आदि भाषाओं की ध्वनियाँ परिलक्षित होती है।

2.4.4 ध्वनि परिवर्तन की दिशाएँ

ध्वनि-परिवर्तन को दो प्रमुख वर्गों में विभक्त किया गया है - (1) बाह्य और (2) आन्तरिक। बाह्य प्रभावों के द्वारा हुए परिवर्तन को बाह्य परिवर्तन की संज्ञा दी गई है तथा जो परिर्वतन बाह्य कारण की अपेक्षा न रखते हुए स्वयं ही हो जाते हैं, उन्हें आंतरिक कारण कहा गया है। संस्कृत के वैयाकरणों ने भी ध्वनि परिवर्तन प्रक्रिया को स्वीकार किया है। उनके विचार से ध्वनि या वर्ण परिवर्तन के कारण वर्णव्यत्यय, वर्णापाय, वर्णोजन एव वर्णविकार हैं-

वर्णव्यत्ययापायोपजनविकारेषु ।वर्णव्यत्यये कृतेस्तर्कः कसेः सिकता, हिंसेः सिंहः ।अपायो लोपः घ्नन्ति, घ्नन्तु, अघ्नन् । उपजन - आगमः, लविता, लवितुम् । विकारः आदेशः घातयति, घातकः ।

अर्थात् महाभाष्यकार पतञ्जलि ने वर्णव्यत्यय के उदाहरण कृत से तर्क, कस से सिकता, हिंसा से सिहः, लोप के उदाहरण घ्नन्ति,, घ्नन्तु और अघ्नन्। आगम के उदाहरण - लविता, लवितुम्, आदेश के उदाहरण - घातयति, घातकः दिए हैं। काशिकाकार ने भी **'वर्णागमो वर्णविपर्ययश्च द्वौ चापरौ' वर्णविकारनाशौ** - लिखकर वर्णपरिवर्तन के सिद्धान्त को प्रतिपादित किया है। आधुनिक भाषाविज्ञानविशारदों के विचार से सामान्यतः ध्वनि-परिवर्तन की दिशाएँ इस प्रकार हैं।

2.4.5 लोप अभिनिधान -

कभी-कभी ध्वनियों के उच्चारण करते समय प्रयत्नलाघव, मुख-सुख या स्वराघात के कारण कुछ ध्वनियाँ लुप्त हो जाती हैं । यह लोप स्वर, व्यञ्जन तथा अक्षर से सम्बन्धित होने से तीन प्रकार का माना गया है-

1. स्वरलोप

2. व्यञ्जन

3. अक्षरलोप ।

उपर्युक्त तीनों के आदि, मध्य और अन्त ये तीन भेद किए गए हैं

स्वरलोप-शब्दों में दो व्यञ्जनों के मध्य में आने वाले स्वर का प्रायः लोप हो जाता है।

जैसे - राजन् उदात्त अस् = राज्ञः।

आदि स्वर लोप - अपूप = पूप, अनाज = नाज, आभ्यन्तर = भीतर।

मध्य स्वर लोप - अरथी = अर्थी बरतन = बर्तन

गलती = गलती DoNot= Dont

अन्त्य स्वर लोप -इसके कारण शब्द प्रायः व्यञ्जनान्त हो गए हैं। लेकिन लिखने में अभी इनका प्रयोग नहीं किया जाता है।

परीक्षा	=	परख (परख्)।	बाहु	=	बाँह (बाँह्)
आम्र	=	आम (आम्)।	भगिनी	=	बहन (बहन्)
दूर्वा	=	दूब (दब्)।	वार्ता	=	बात (बात्)

व्यञ्जन लोप- इसके भी तीन प्रकार बताए गए हैं-

1. आदि व्यञ्जन लोप,
2. मध्य व्यञ्जन लोप और
3. अन्त्य व्यञ्जन लोप।

1. आदि व्यञ्जन लोप- उच्चारण की कठिनाई के कारण अंग्रेजी आदि भाषाओं में आदि व्यञ्जन का लोप हो जाता है। जैसे-

Write .	Rite	प्रिय -पिय (हिन्दी)
Know .	Now	श्मशान - मसान (हिन्दी)
Knight.	Night	स्थाली - थाली (हिन्दी)
Knife .	Nife	स्थान - थान (हिन्दी)

2. **मध्य व्यञ्जन लोप -** संस्कृत शब्दों के मध्य में आने वाले क, ग, च, ज, त, द, न, प, फ, य, र, ल, व, ष तथा विसर्ग (:) का प्रयाः हिन्दी में लोप हो जाता है-

श्रृगाल = सियार	पिप्पल = पीपल
कुक्कुर = कूकर	शय्या = सेज
सूची = सूई	उत्पत्तियॉं = उपज
उष्ट्र = ऊँट	अर्द्ध = आधा
कोकिल = कोईल	फाल्गुन = फागुन
लज्जा = लाज	दुःख = दुख
दुग्ध = दूध	

प्राकृत भाषा में इसके बहुत से उदाहरण मिलते हैं-

सागर = साअरो

भोजन = भोअण

प्रिय = पिय

हिन्दी की बोलियों में भी इस तरह की प्रवृत्तियॉं दिखाई देती है-

ज्वार = जर	ब्राह्मण = ब्राम्हन
बुद्ध = बुध	कार्तिक = कातिक
कायस्थ = कायथ	उपवास = उपास

इसी तरह अंग्रजी में तो उच्चारण का लोप हो गया है, लेकिन लिखित रूप में अभी मौजूद हैं-

Talk	टॉक
Right	राइट
Walk	वॉक
Daughter	डॉटर

3. **अन्त्य व्यञ्जन लोप-**

सत्य = सत (सच)	पश्चात् = पश्चा (प्राकृत)
चरित्र = चरित (चरित्)	यावत् = जब
कुंकुम = कुम्मो	निम्ब = नीम
आम्र = आम	

अक्षर लोप - इसके चार भेद किए गए हैं-

1. आदि अक्षर लोप
2. मध्य अक्षर लोप
3. अन्त्य अक्षर लोप
4. समाक्षर लोप

1. **आदि अक्षर लोप** (Apheresis)

University	.	Versity	त्रिशूल	- शूल
Defence	.	Fence	अध्यापक	- झा
Necktie	.	Tie	व्याकुल	- आकुल

2. **मध्य अक्षर लोप**

वरूजीवी	-	बरई	गोधूमचणा	-	गिहुँचना
भण्डागार	-	भण्डार	गेहूँ जब	-	गोजई
राज्यकुल	-	राउर	दस्तखत	-	दस्खत

3. **अन्त्य अक्षर लोप**

मौक्तिक	-	मोती,	दीपवर्तिका	- दीवट
माता	-	माँ,	यज्ञोपवीत	- जनेऊ

निम्बुक - नींबू, जीव - जी
भ्रातृजाया - भावज, सपाद - सवा

3- समाक्षर लोप- (Haplology) किसी एक ही शब्द में अक्षर या अक्षर समूह साथ-साथ दो बार प्रयुक्त किए जाते हैं तो उच्चारण की सुविधा के कारण उनमें से एक का लोप हो जाता है, तब उसे समाक्षर लोप कहा जाता है।

जैसे- शष्पपिञ्जर - शष्पिञ्जर
खरीददार - खरीदार
नाककटा - नकटा
Part–time - Partime

कभी-कभी ध्वनि या अक्षर पूर्णतः एक ही न होकर उच्चारण में मिलते - जुलते है, तब भी एक का लोप हो जाता है-

कुष्णनगर - कृष्णनगर

इनके भी तीन उपभेद किए गये हैं।

1. समव्यञ्जन लोप
2. समस्वर लोप और
3. समाक्षर लोप

2.4.6 आगम- प्रागुपजन

उच्चारण करते समय कभी-कभी मुख-सुख के लिए कुछ व्यञ्जनों, विशेषतया संयुक्त व्यञ्जनों के आदि, मध्य तथा अन्त में स्वरों तथा व्यञ्जनों का आगम हो जाता है। प्रारम्भ में आने वाले स्वर को प्रागुपजन कहा गया है। इसमें शब्द के प्रारम्भ में कोई स्वर प्रयुक्त हो जाता है

जैसे - स्तुति - इस्तुति
स्नान - अस्नान
स्कूल - इस्कूल

मध्य स्वरागम- अज्ञानता अथवा बोलने की सुविधा के लिए कभी-कभी मध्य में अन्तर का प्रयोग किया जाता है-

कर्म - करता ब्रह्म- बरहमा (बरमा)
प्रकार - परकार बक - बगुला
मर्म - मरम मिश्र - मिसुर
प्रसाद - परसाद भ्रम - भरम

अन्त्य स्वरागम-

गल	-	गला		
स्वप्न	-	सपना		
दवा	-	दवाई		
निपुणता	-	निपुनाई (निपुनाई)		
हरीतिमा	-	हरियाई		
चतुरता	-	चतुराई		

व्यञ्जनागम

आदि व्यञ्जनागम-

अस्थि	-	हड्डी
ओष्ठ	-	होठ
उल्लास	-	हुलास

मध्य व्यञजनागम-

शाप	-	श्राप	वानर	-	बन्दर
समुद्र	-	समुन्दर	लाश	-	लहास
सुख	-	सुक्ख	Panel	.	Pannel

अन्त्य व्यञ्जनागम-

चील	- चील्ह	परवा	- परवाह
रंग	- रंगत (अरबी)	देह	- देहार (फारसी)
भोंह	- भौंह	Cautio	- Caution(अंग्रेजी)

अक्षरागम

आदि अक्षरागम-

स्फोट - विस्फोट

गुञ्जा - घुंघुची

मध्य अक्षरागम-

खल	-	खरल
आलस	-	आलकस

गरीबनिवाज - गरीबुलनिवास

अन्त्य अक्षरागम- ढफ - ढफली

तावे - तावेदार

वधू - वधूटि

2.4.7 स्वरभक्ति या विप्रकर्ष-

संयुक्त व्यञ्जनों के उच्चारण में होने वाली असुविधा को समाप्त करने के लिए उनके बीच में स्वर के आगम को स्वरभक्ति या विप्रकर्ष कहा गया है। यथा-

युक्ति - युगति (जुगति)

पंक्ति - पंगति

भक्ति - भगति

अपिनिहित-समस्वरागम -आदिस्वर तथा अपिनिहित में विद्वानों ने कुछ अन्तर दर्शाये हैं-

1. आदि स्वरागम में कोई भी स्वर आ सकता है लेकिन अपिनिहित में केवल उसी स्वर का आगम होता है जो या तो पहले से विद्यमान को अथवा उसी प्रकृति का हो।

2. आदि स्वरागम में आने वाला स्वर हमेश आदि में प्रयुक्त होता है जबकि अपिनिहित में ऐसा कोई बन्धन नहीं है।

2.4.8 समीकरण

समीप स्थित दो वर्ण जब परस्पर प्रभावित होकर वर्णों में से एक रूप परिवर्तित कर दूसरे को स्वरूप ग्रहण करता है तो उसे समीकरण कहते हैं। संस्कृत के वैयाकरणों ने इसे सवर्णीकरण नाम से पुकारा है। इसके दो भेद किए गये हैं-

1. पुरोगामी और

2. पश्चगामी

स्वर तथा व्यञ्जन के आधार पर इनके उदाहरणों को प्रस्तुत किया जा रहा है-

1- **पुरोगामी**

दूरवर्ती - विलपना = विलबना

पार्श्ववर्ती - पद्म = पद्द,

चक्र = चक्क,

वक्र = वक्क।

2- **पश्चगामी**

दूरवर्ती - नीला = लीला, नील = लील।

पार्श्ववती - धर्म = धम्म, कर्म = कम्म,

सर्प = सप्प।

स्वर-

1. **पुरोगामी**

दूरवर्ती - जुल्म = जुलुम।

पार्श्ववती – आइए = आइइ।

2. **पश्चगामी**

दूरवर्ती - असूया = उसूया।

2.4.9 विषमीकरण

यह समीकरण का उल्टा है। इसमें दो समान समीपस्थ ध्वनियों में एक ध्वनि अपने स्वरूप का परित्याग कर विषम या असम बन जाती है, तब इसे विषमीकरण कहा जाता है। जब पहला वर्ण तो ज्यों का त्यों स्थित रहता है, परन्तु दूसरे में परिवर्तन हो जाता है तो उसे 'पुरोगामी विषमीकरण' कहा जाता है।

जैसे - काक = काग,

कंकण = कंगन,।

लांगूल = लंगूर।

पश्चगामी विषमीकरण में प्रथम वर्ण में परिवर्तन होता है।

जैसे -	नूपुन	=	नेउर,	
	मुकुट	=	मउर	(मौर),
	मुकुल	=	मउल।	

2.4.10 विपर्यय

कभी-कभी शीघ्रतापूर्वक उच्चारण करते समय शब्द की ध्वनियों का स्थान परिवर्तित हो जाता है। ध्वनियों के स्थान पर परिवर्तन को विपर्यय कहते हैं। विपर्यय कई प्रकार का होता है-

स्वर- विपर्यय, व्यञ्जन विपर्यय तथा अक्षर विपर्यय। समीप की ध्वनियों के परिवर्तन को पार्श्ववर्ती विपर्यय तथा दूसरवर्ती ध्वनियों के परिवर्तन को दूरवर्ती विपर्यय कहते हैं।

स्वरविपर्यय

(क) पार्श्ववर्ती स्वर विपर्यय- फा0 में जानवर का हिन्दी में जानवर, अंगुली को उंगुल इंडो (अफ्रीकी भाषा में) स्पम = स्मप (बनाना) आदि।

(ख)	दूरवर्ती स्वर विपर्यय	-	अनुमान	=	उनमान,
			पागल,	=	पगला,
			खट्टा	=	खाट आदि।

व्यञ्जन विपर्यय

(क)	**पार्श्ववर्ती विपर्यय**-		चिह्न	=	चिन्ह,
			ब्रह्म	=	बम्ह,
			हनान	=	नहान,
			डूबना	=	बूड़ना,
			डेस्क	=	डेक्स आदि
(ख)	**दूरवर्ती स्वर विपर्यय**	-	तमगा	=	तगमा,

अमरूद = अरमूद,

सिगनल = सिंगल आदि।

अक्षर विपर्यय

(क) पार्श्ववर्ती विपर्यय- अरबी - मतलब = मतबल,

अचरज(अरबी) = (उर्दू) अरजक (नीला),

खन = नख आदि।

(ख) दूरवर्ती स्वर विपर्यय - लखनऊ - नखलऊ आदि।

आद्य शब्दांश - विपर्यय (SPOONERISM)- जब दो शब्दों के प्रारम्भ के अक्षरों में विपर्यय हो जाता है तो उसे आद्य शब्दांश - विपर्यय कहते हैं। आक्सफोर्ड के विद्वान् डा0. डब्लयू0 ए0 स्पूनर के नाम से इसे 'स्पूनरिज्म (Spoonerism) कहते हैं क्योंकि उन्हें इस प्रकार के विपर्यय बोलने की लत भी।

उन्हीं के द्वारा प्रयुक्त कुछ उदाहरण देखे जा सकते हैं- एक बार कुल से उन्होंने 'दो थैले तथा एक कम्बल (Two bags and a rug) ले जाने के स्थान पर 'दो चिथले तथा एक खटमल' (Two Rags and a gug) ले जाने को कह दिया।

इसी प्रकार उन्होंने एक विद्यार्थी को डाँटते समय कहा कि –You have tasted a whole worm जबकि कहना चाहते थे You have wated a whole teme

इस प्रकार विपर्यय होना उनकी आदत में था। हिन्दी में ऐसे उदाहरण - 'चावल-दावल' (दाल चावल), नेन तूल (नून तेल) जैसे बनाए जा सकते हैं।

2.4.11 अभिश्रुति (Umlaut)

स्वरों तथा व्यञ्जनों से प्रभावित होकर आदि अपिनिहित के कारण प्रयुक्त हुआ स्वर परिवर्तित हो जाता है तो उसे अभिश्रुति कहा जाता है-

Mani = Maini = Men

अपश्रुति (Ablaut)- जब किसी शब्द में व्यञ्जनों के यथावत् रहते हुए भी केवल स्वर

परिवर्तन से रूप तथा अर्थ में अन्तर हो जाय तथा अनेक रूप निर्मित हो जायँ तो उसे अपश्रुति कहा जाता है। जैसे-

एकवचन	**बहुवचन**
अंग्रजी - फुट (पैर)	फीट (पैर)
अरबी - किताब (पुस्तक)	कुतुब (पुस्तकें)
संस्कृत - अस्ति (है)	सन्ति (है)
पुँलिंग	**स्त्रीलिंग**
कृष्ण	कृष्णा
राम	रमा

अपश्रुति के अन्तर्गत ही भारतीय वैयाकरणों द्वारा बताए गए गुण, वृद्धि और सम्प्रसारण भी आ जाते हैं। सम्प्रसारण में य्, व्, र् ल्, क्रमशः इ, उ, ऋ, लृ, में परिवर्तित हो जाते हैं। जैसे-

ग्रभे = गृभे, श्वन = शुनः,

वक्तवे = उक्त, चत्वारः = चतुरः।

2.4.12 सादृश्य या मिथ्यासादृश्य (Analogy or false analogy)

समानता के कारण भी ध्वनियाँ परिवर्तित हो जाती है। जब कुछ शब्दों में दूसरों के सादृश्य से ध्वनि परिवर्तन होता है तो इसे सादृश्य या मिथ्यासादृश्य कहा जाता है। इसे औपम्य या उपमान भी कहा जता है। जैसे - 'सर्प' शब्द नरक के सादृश्य से सरप। डाक्टर भोलानाथ तिवारी के शब्दों में 'संस्कृत में द्वादश के सादृश्य पर एकदश भी एकादश हो गया है।

2.4.13 अनुनासिकता-

अनुनासिकता के कारण भी ध्वनियाँ परिवर्तित हो जाती है। इस परिवर्तन प्रकार में मुख-सुख ही प्रमुख कारण है। जैसे-

सत्य = साँच,

वक्र = बाँका,

सर्प = साँप,

कूप = कुआँ।

ऊष्मीकरण- कभी-कभी ध्वनियाँ ऊष्म ध्वनियों में परिवर्तित हो जाती हैं। इसे ही ऊष्मीकरण कहा जाता है। उदाहरणस्वरूप केन्टृम् वर्ग की भाषाओं की 'क' ध्वनि' 'शतम्' वर्ग में ऊष्मीकरण को प्राप्त हो गयी है।

सन्धि - संस्कृत भाषा में सन्धियों का महत्पूर्ण स्थान है। सन्धियों के नियम स्वर और व्यञ्जन दोनो के लिए है। संस्कृत के अलावा दूसरी भाषाओं में सन्धियों के नियमों का प्रयोग हुआ है। कभी-कभी तो सन्धियों के माध्यम से इतना परिवर्तन हो जाता हैः कि सम्पूर्ण ध्वनियों का समझना ही कठिन हो जाता है।

जैसे-

तद् + श्लोकेन = तच्छलोकेन,

वाक् + हरिः = वाग्घरिः

हिन्दी- नयन = नइन = नैन।

सपत्नी = सवत = सौत।

घोषीकरण - जब अघोष ध्वनियाँ, घोष ध्वनियों में परिवर्तित हो जाती है, तो उसे घोषीकरण कहा जाता है। जैसे-

मकर = मगर, सकल = सगल, काक = काग।

अघोषीकरण - इसमें सघोष ध्वनि अघोष के रूप में परिवर्तित हो जाती है, अतः इसे 'अघोषीकरण' कहा जाता है। जैसे-

नगर = नकर, अदद = अदत।

महाप्राणीकरण- अल्पप्राण ध्वनियाँ जब महाप्राण में परिवर्तित हो जाती हैं, तो उसे 'महाप्राणीकरण कहा जाता है। जैसे-

वाष्प = भाप, गृह = घर हस्त =हाथ।

अल्पप्राणीकरण - जब महाप्राण ध्वनियाँ अल्पप्राण में बदल जाती है तो उसे अल्पप्राणीकरण कहा जाता हैं। जैसे-

धधामि = दधामि, सिन्धु = हिन्दू।

मात्राभेद- उच्चारण में कभी दीर्घ को ह्रस्व और कभी ह्रस्व का दीर्घ हो जाता है। जैसे-

अक्षत = आखत, हस्त = हाथ सत्य = साँच।

नासिका - नासिका विवर प्रत्यक्ष परिलक्षित होता है। यह श्वास प्रश्वास वायु का मुख्य स्थान व साधन है। अनुनासिक वर्णों का उच्चारण नासिका विवर की सहायता से किया जाता है।

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि ध्वनियों के उच्चारण में शरीरावयवों का महत्व पूर्ण स्थान है। इनके विकृत हो जाने से ध्वनियों का उच्चारण करना सम्भव नहीं है।

2.5 सारांश

इस इकाई में पढ़ने के बाद आप जान चुके हैं-

1. ध्वनियॅा में परिवर्तन होता रहता है।

2. इस ध्वनि परिवर्तन को भाषा विज्ञानी विकार अथवा विकास कहते हैं।

3. कभी-कभी ध्वनियों में परिवर्तन होते-होते कुछ ध्वनियों का प्रयोग कम हो जाता है।

4. परिवर्तन होते-होते शनै-शनै कुछ ध्वनियाँ लुप्त हो जाती है और कुछ नवीन ध्वनियों का समावेश हो जाता है।

5. इस ध्वनि परिवर्तन के अनेक कारण हैं। इनमें आभ्यन्तर और बाह्य कारण प्रमुख ध्वनियों का समावेश हो जाता है।

6. आभ्यन्तर कारणों में प्रयत्न राघव, बोलने में शीघ्रता, अशिक्षा, अज्ञान, अनुकरण की अपूर्णता आदि मुख्य कारण है।

7. बाह्य कारण में भौगोलिक प्रभाव, सामाजिक तथा राजनैतिक प्रभाव, लेखन प्रभाव, संक्षिप्त बनाने की प्रवृत्तियॅा आदि मुख्य कारण हैं।

8. यहाँ आभ्यन्तर और बाह्य दोनों प्रकार के कारणों पर सम्यक् प्रकाश डाला गया है ।

9. ध्वनि परिवर्तन की दिशाओं का विवेचन किया गया है।

10. ध्वनि परिवर्तन की दिशाओं में स्वर -लोप, व्यञ्जन लोप, अक्षरलोप आदि आते हैं। यहाँ इनका सम्यक् विश्लेषण किया गया है।

11. ध्वनि परिवर्तन के आभ्यन्तर और बाह्य कारणों तथा ध्वनि परिवर्तन की दिशाओं के विषय में प्रकाश डालकर यथा स्थान उनके उदाहरण दिये गये हैं।

2.6 शब्दावली

आभ्यन्तर करण - ध्वनि परिवर्तन में जो आन्तरिक कारण होते हैं, उन्हें आभ्यन्तर कारण कहते हैं।

प्रयत्नलाघव--मनुष्य शब्द के उच्चारण में प्रयत्न करता है। अधिक श्रम से बचने का प्रयत्न करता है। जब किसी शब्द के उच्चारण में उसे कठिनाई होती है। तब वह अपनी सुविधा के लिए उसका उच्चारण अपने ढंग से कर देता है। इसे प्रयत्नलाघव कहते हैं। जैसे - इन्द्र को इन्दर।

यदृच्छा - कभी-कभी व्यक्ति बोलते समय अपने आप शब्द बनाकर बोलते हैं, उन्हें यदृच्छा शब्द कहते हैं। जैसे - पट - पटा करोति। हिन्दी में कभी -कभी एक शब्द की समानता पर जोडा़ शब्दों का निर्माण कर बोल देते हैं। जैसे खाना-बाना, रोटी-ओटी, पानी-बानी इत्यादि।

सादृश्य- सादृश्यता के कारण भी ध्वनि परिवर्तन हो जाता है। जैसे - द्वादश के सादृश्य पर एक- दश भी एकादश बन गया है।

बलाघात- बलाघात से ध्वनिपरिवर्तन हो जाता है। बलाघात युक्त ध्वनि सबल होकर समीपवर्ती ध्वनियॉं को निर्बल कर देती है और बाद में ध्वनियाँ लुप्त हो जाती हैं।

जैसे - आकाश का अकाश।

वर्णव्यत्यय - वर्णोंक में व्यत्यय अर्थात् उलट फेर से परिवर्तन हो जाता है। जैसे - कृत से तर्क, हिंस से सिंह।

वर्णापाय- वर्ण के अपाय अर्थात् लोप हो जाने से परिवर्तन हो जाता है। जैसे - हन् धातु से लट् लकार के प्रथम पुरूष, बहुवचन में ध्नन्ति बन जाता हैं

वर्णागम -वर्ण के आगम से भी परिवर्तन हो जाता है। जैसे - बभूव में भू धातु से वुक् का आगम होता है।

वर्णविकार-वर्ण के विकार से भी परिवर्तन हो जाता है।

जैसे - हन् धातु से धातक।

लोप अभिनिधान-कभी-कभी ध्वनियों के उच्चारण करते समय प्रयत्नलाघव, मुखसुख या स्वराघात के कारण कुछ ध्वनियाँ लुप्त हो जाती है। इसे लोप अभिनिधान कहते हैं।

जैसे - राजन् उदात्त ङस् = राज्ञः।

आगम प्रागुपजन- उच्चारण करते हुए कभी-कभी मुखसुख के लिए प्रयुक्त कुछ व्यजनों - मुख्य रूप से संयुक्त व्यजनों के आदि, मध्य और अन्त में स्वरों तथा व्यजनों का आगम हो जाता है। इसे आगम प्रागुपजन कहते हैं-

जैसे - स्तुति - इस्तुति।कर्म – करम ।

स्वरभक्ति या विप्रकर्ष-संयुक्त अक्षरों के उच्चारण में होने वाली असुविधा के दूर करने के लिए उनके बीच में स्वर आगम को स्वरभक्ति कहते हैं। जैसे - भक्ति - भगति।

समीकरण -समीप स्थित दो वर्ण जब परस्मपर प्रभावित होकर एक वर्ण अपने रूप को परिवर्तित कर दूसरे का स्वरूप ग्रहण कर लेता है तो उसे समीकरण कहते हैं। संस्कृत के वैयाकारण इसे सवर्णीकरण कहते हैं।

जैसे - चक्र - चक्क।

विषमीकरण -यह समीकरण का उल्टा है। इसमें दो समान समीपस्थ ध्वनियों में एक ध्वनि अपने स्वरूप का परित्याग कर विषम या असम बन जाती है तब इसे विषमीकरण कहते हैं।

जैसे - मुकुट – मउर ।

आद्य शब्दांश विपर्यय- जब दो शब्दों के प्रारम्भ के अक्षरों में विपर्यय हो जाता है तो उसे आद्य शब्दांश विपर्यय कहते हैं। जैसे - हिन्दी में चावल -दाल को दाल - चावल कह देते हैं।

अभिश्रुति- स्वरों तथा व्यञ्जनों से प्रभावित होकर यदि अपिनिहित के कारण प्रयुक्त हुआ स्वर परिवर्तित हो जाता है तो उसे अभिश्रुति कहते हैं।

अपश्रुति- जब किसी शब्द में व्यञ्जनों के यथावत् रहते हुए भी कवेल स्वर परिवर्तन से रूप तथ अर्थ में अन्तर हो जाये तो उसे अपश्रुति कहते हैं। जैसे - अस्ति- सन्ति।

घोषीकरण- जब अघोष ध्वनियाँ घोष ध्वनियों में परिवर्तित हो जाती हैं तो इसे घोषीकरण कहते हैं।

अघोषीकरण- जब सघोष ध्वनि अघोष रूप में परिवर्तित हो जाती हैं तो उसे अघोषीकरण कहते हैं।

महाप्राणीकरण -जब अल्पप्राण ध्वनियाँ महाप्राण ध्वनियों में परिवर्तित हो जाती हैं तो उसे महाप्राणीकरण कहते हैं।

2.7 अभ्यास प्रश्न एवं उनके उतर

प्रश्न 1 - भाषा विज्ञानी ध्वनि परिवर्तन को कहते हैं।

(क) व्याकरण (ख) निरूक्त

(ग) विकास या विकार (घ) आगम

उत्तर (ग) विकास या विकार।

प्रश्न 2 - विस्फोट में है-

(क) स्वरागम (ख) अक्षरागम

(ग) विपर्यय (घ) सन्धि

उत्तर (ख) अक्षरागम ।

प्रश्न 3 - सादृश्य के द्वारा होता है

(क) विपर्यय (ख) ध्वनि-परिवर्तन

(ग) सन्धि (घ) आगम

उत्तर (ख) ध्वनि- परिवर्तन।

प्रश्न 4 - बभूव में है-

(क) वर्णागम (ख) वर्णापाय

(ग) वर्ण व्यत्यय (घ) बलाघात

उत्तर (क) वर्णागम।

प्रश्न 5 - घातक में है-

(क) बलाघात (ख) वर्ण व्यत्यय

(ग) वर्ण-विकार (घ) वर्णापाय

उत्तर (ग) वर्ण विकार

2.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. यास्क, निरूक्त, सम्पादक डा0 शिवबालक द्विवेदी (सं0 2057) - संस्कृत नवप्रभात न्यास, शारदानगर, कानपुर।

2. द्विवेदी डा0 शिवबालक (2003 ई0) संस्कृत व्याकरणम् - अभिषेक प्रकाशन, शारदानगर, कानपुर।

3. श्रीवरदराजाचार्य (सं0 2017) मध्यसिद्धान्त कौमुदी - चौखम्भा संस्कृत सीरीज आफिस वाराणसी।

4. आप्टे वाम शिवराम (1939 ई0) संस्कृत हिन्दी कोश- मोती लाल बनारसीदास बंग्लो रोड, जवाहरनगर दिल्ली।

5. द्विवेदी डा0 शिवबालक (1879ई0) संस्कृत भाषा विज्ञान- ग्रन्थम रामबाग, कानपुर।

2.9 सहायक/उपयोगी पाठ्य सामग्री

1. तिवारी डा0 भोलानाथ (2005 ई0) भाषाविज्ञान - किताबमहल सरोजनी नायडू मार्ग, इलाहाबाद।

2. द्विवेदी डा0 शिवबालक (2005 ई0) भाषा विज्ञान - ग्रन्थम रामबाग, कानपुर।

3. द्विवेदी डा0 शिवबालक (2010 ई0) संस्कृत रचना अनुवार कौमुदी, हंसा प्रकाशन, चांदपोल बाजार , जयपुर।

4. शास्त्री भीमसेन (सं0 2006) लघुसिद्धान्तकौमुदी - लाजपतराय मार्केट दिल्ली।

5. महर्षि पतंजलि (1969 ई0) व्याकरण महाभाष्य - मोतीलाल बनारसी दास बंग्लोरोड ,जवाहरनगर, वारणसी।

6. शास्त्री चारूदेव (1969 ई0) व्याकरण चन्द्रोदय, मोतीलाल बनारसीदास, बंग्लोरोड, जवाहरनगर ,वारणसी।

7. डा0 रामगोपाल (1973 ई0) वैदिक व्याकरण - नेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली।

2.10 निबन्धात्मक प्रश्न

(क)

1. ध्वनि परिवर्तन के कारणों पर प्रकाश डालिए।

2. ध्वनि परिवर्तन के आभ्यन्तर कारणों को बतलाइए।

3. ध्वनि परिवर्तन के बाह्य कारणों पर प्रकाश डालिए।

4. ध्वनि परिवर्तन की दिशाओं पर प्रकाश डालिए।

(ख) निम्नलिखित विषयों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

1. लोप अभिनिधान
2. समाक्षर लोप
3. आगम प्रागुपजन
4. स्वरभक्ति या विप्रकर्ष
5. समीकरण
6. विषमीकरण
7. विपर्यय
8. अभिश्रुति
9. अपश्रुति
10. सादृश्य